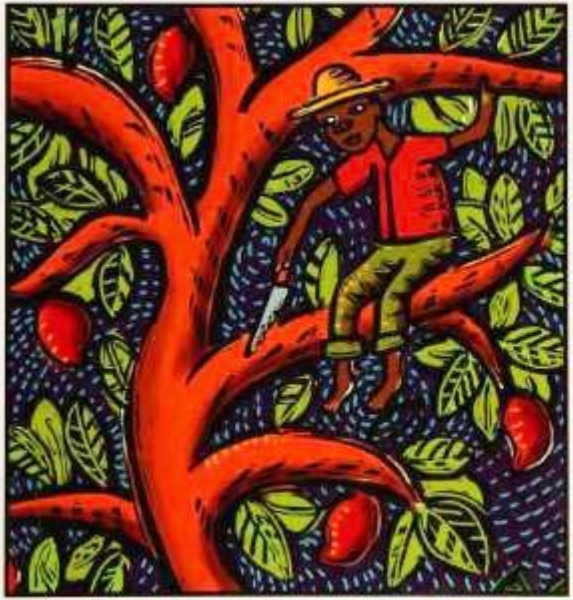
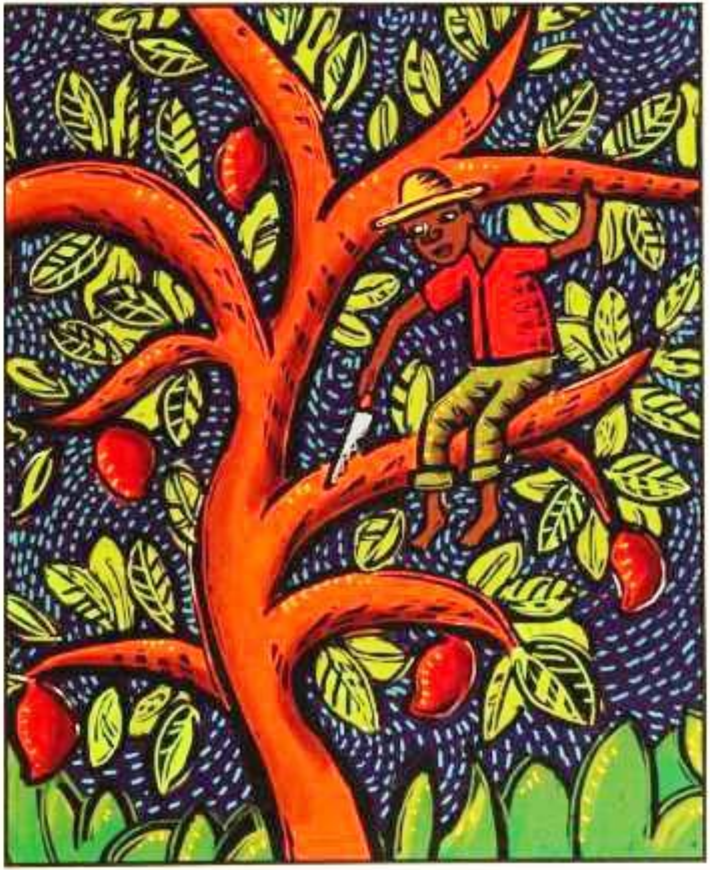
बौकी ने लकड़ी काटी

हेती की लोककथा



बौकी ने लकड़ी काटी

हेती की लोककथा



नमस्कार, मित्रो. मैं एक बौकी कहानी सुनाने जा रहा हूँ. हेती देश में कई बौकी कहानियाँ प्रचलित हैं. लेकिन यह कहानी? यह मेरी सबसे प्रिय कहानी है. यह सबसे रोचक कहानी है.

बौकी एक मूर्ख व्यक्ति होता है जो सदा मुसीबत में फंस जाता है. हेती में कई लोग जंगलों में लकड़ी काटने के लिए जाते हैं-घर बनाने के लिए या चूल्हे में जलाने के लिए लकड़ी लाने जंगल में जाते है. लेकिन जब बौकी लकड़ी काटता है तो दुर्घटना हो ही जाती है.....

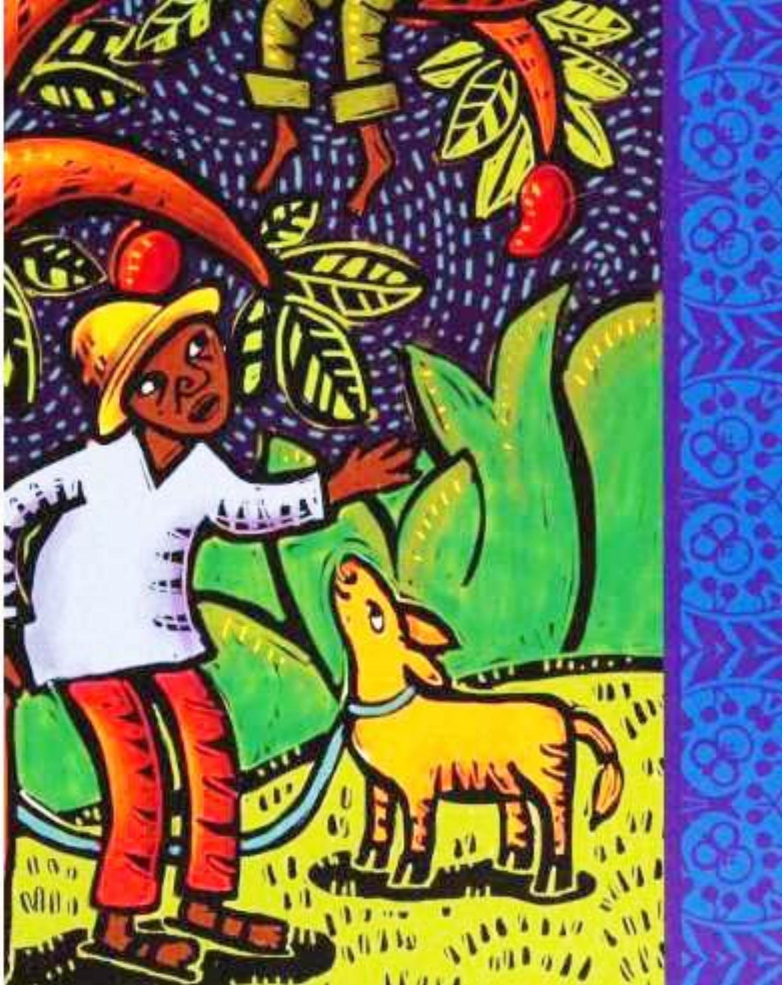
मंगलवार का दिन था, मुझे पक्का पता है. एक वृद्ध कच्चे रास्ते पर चलता हुआ देवदार के जंगल की ओर जा रहा था. वह कुछ लकड़ी काटना चाहता था. रास्ते में उसने एक बकरी को एक आम के पेड़ के साथ बंधा हुआ देखा.

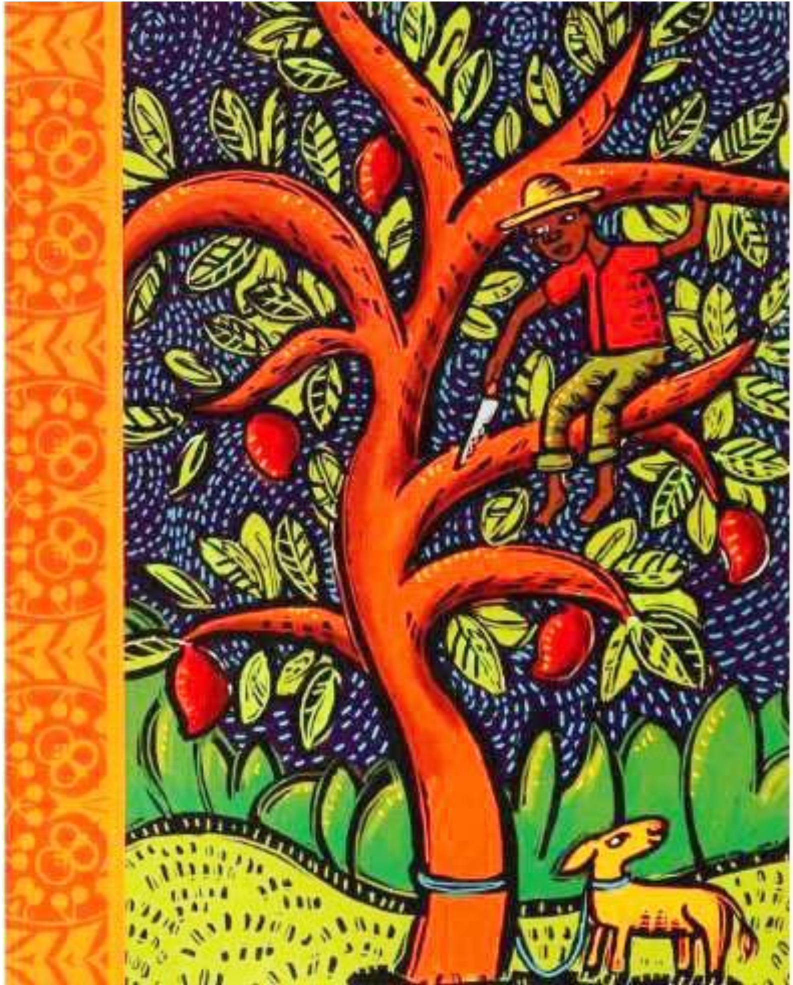
मैं...मैं..., बकरी चिल्लाई.

बकरी का मालिक कहाँ है? वह सोचने लगा. तभी वृद्ध को लकड़ी काटने की आवाज़ सुनाई दी, चॉप चॉप चॉप.

वृद्ध आम के पेड़ के नीचे आ गया और उसने ऊपर देखा. पेड़ की एक डाल के सिरे पर एक बौकी बैठा लकड़ी काट रहा था.

“अरे, क्या तुम ठीक हो?” वृद्ध ने बौकी से पूछा.





यह निश्चित करने के लिए कि वृद्ध उससे ही बात कर रहा था, बौकी ने इधर-उधर देखा. “हाँ, बेशक मैं एक आम के समान प्रसन्न हूँ. परन्तु आपने यह क्यों पूछा?”

“क्यों? क्योंकि तुम उसी डाल को काट रहे हो जिस पर तुम बैठो हो, ओ मूर्ख! यह डाल अभी टूट जाएगी और तुम नीचे गिर जाओगे!”

“हा?” अपना सिर खुजलाते हुए बौकी ने कहा. “क्या आप यह कहना चाहते हैं कि आप मेरा भविष्य जानते हैं? कितने अनाड़ी हैं? एक ज्योतिषी ही किसी आदमी का भविष्य बता सकता है. जाइये यहाँ से.”

बौकी ने वृद्ध को भगा दिया. फिर, चॅाप चॅाप, उसने डाल को थोड़ा और काटा.

ज़ोर से चटकने की आवाज़ हुई. जैसे ही डाल टूटी, बौकी की बकरी तीन कदम बाएं चली गई. धड़ाम! बौकी और डाल पेड़ से नीचे आ गिरे.



जब बौकी कुछ सोचने-समझने की स्थिति में हुआ तो उसे उस वृद्ध का ध्यान आया. "हे भगवान," बौकी चिल्लाया, "वह वृद्ध सच्चा ज्योतिषी होगा!"

यह विचार मन में आते ही बौकी कच्चे रास्ते पर वृद्ध के पीछे-पीछे दौड़ने लगा. बौकी जितनी तेज़ दौड़ सकता था दौड़ा-पर उसकी गति बहुत तेज़ न थी.

"वृद्ध महाशय, वृद्ध महाशय!" बौकी चिल्लाया. "कृपया मुझे बतायें. मुझे बतायें कि मेरी मृत्यु कब होगी?"

"मुझे कैसे पता होगा?" वृद्ध ने पूछा. "मैं एक साधारण बूढ़ा आदमी हूँ."

"नहीं," बौकी ने कहा. "आप एक सच्चे ज्योतिषी हैं. बस मुझे यह बतायें कि मेरी मृत्यु कब होगी."

जैसे ही वृद्ध रुक कर कुछ सोचने लगा, दूर बौकी की बकरी मिमियाने लगी. इससे वृद्ध के मन में एक नटखट विचार आया.

“बौकी,” वृद्ध ने कहा. “जब तुम्हारी बकरी तीन बार मिमियाएगी तब तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी.” यह सच न था पर लेकिन वृद्ध बौकी से झुटकारा पाना चाहता था.

बौकी घबरा गया और रोने लगा. वह जानता था कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जायेगी. उसकी बकरी तो हर समय मिमियाती रहती थी!

बौकी जितनी तेज़ दौड़ सकता था उतनी तेज़ आम के पेड़ की ओर दौड़ा. उसकी बकरी आम का रस चूसते हुए मिमिया रही थी, मैं..मैं...

“चुप, चुप!” बौकी ने आम छीनते हुए कहा.



मैं...मैं... बकरी घास खाते हुए मिमियाई.

ओह, नहीं. बौकी की बकरी दो बार मिमिया चुकी थी. बौकी को पूरा विश्वास था कि अगर बकरी तीसरी बार मिमियाई तो उसकी मृत्यु हो जायेगी, जैसा कि ज्योतिषी ने कहा था. बौकी ने लम्बी घास उखाड़ ली और उसे बकरी के मुंह पर लपेट कर उसका मुंह बंद कर दिया.

“अब यह मिमिया न पाएगी,” बौकी ने गर्व से अकड़ते हुए कहा.

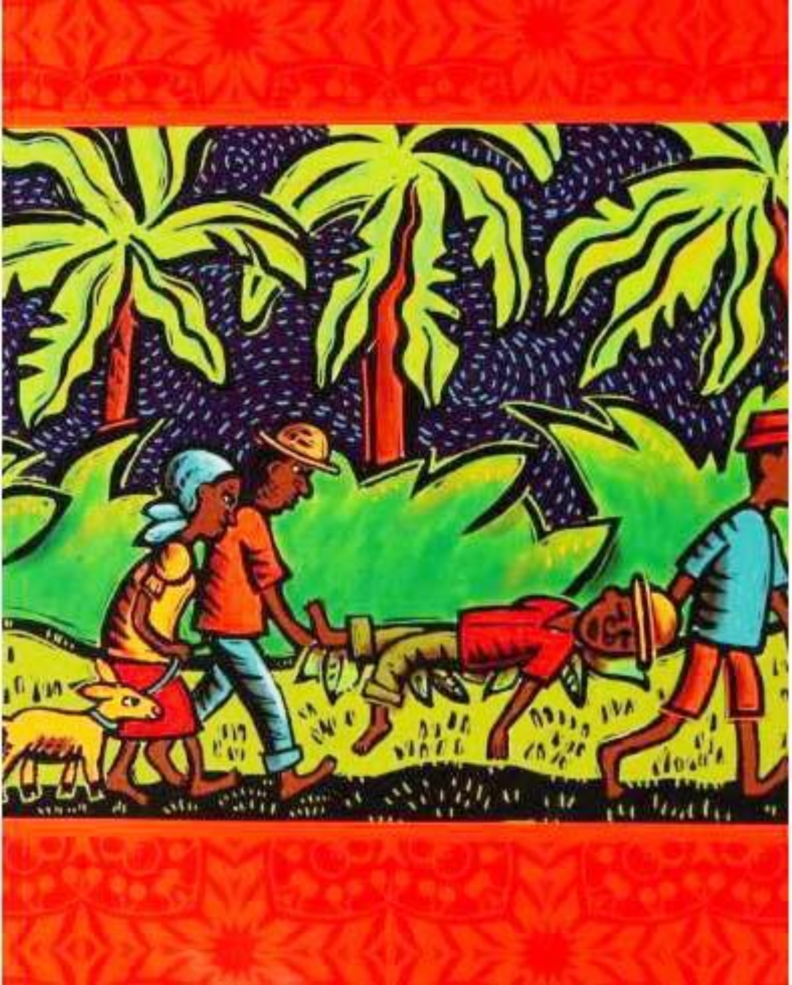
बौकी ने अपनी आरी उठाई. वह आम के पेड़ पर चढ़ गया और पहले की तरह ही वह फिर से लकड़ी काटने लगा.

उस रास्ते पर एक औरत चलती आई. उसने बकरी को देखा जिसके मुंह पर लंबी घास लपेटी हुई थी. “कितनी अजीब बात है!” वह बोली.

औरत बौकी की बकरी के पास आई और उसके मुंह पर लिपटी घास को उसने खोल दिया. मैं...जितनी ऊंची आवाज़ में बकरी मिमिया सकती थी वह मिमियाई. बौकी ने जब बकरी की आवाज़ सुनी तो वह डर से कांप गया.

“यही अंत है,” बौकी ने कहा. “मेरी बकरी तीन बार मिमिया चुकी है. इस का अर्थ है की मैं मर गया हूँ!” बौकी पेड़ इस तरह नीचे गिरा जैसे की वह मर चूका था. धड़ाम!





“हे भगवान,” औरत चिल्लाई. “बौकी मर गया है!” वह भाग कर निकट के गाँव गई और कुछ लोगों को बुला लाई ताकि बौकी को उठा कर उसके घर लाया जा सके.

“बेचारा बौकी!” औरत ने सुबुकते हुए कहा.

ताकतवर लकड़हारों ने केले के पत्तों से बने झूले में बौकी को उठा लिया. वह उसे उठा कर उसके घर ले चले. उस भली औरत ने बौकी की पेड़ से बंधी बकरी खोल ली और साथ-साथ चलने लगी.



शीघ्र ही वह लोग पहाड़ी की तलहटी तक आ गये. वहां एक जगह बलूत के एक विशाल पेड़ ने रास्ते को दो भागों में बाँट दिया था.

"बाएं ओर चलो. बौकी उधर एक लकड़ी के घर में रहता है," एक लकड़हारे ने कहा.

"मूर्खों जैसे बात न करो," दूसरे ने कहा. "बौकी फूस के घर में रहता है. दायें चलो."

"असल में बौकी का घर पीछे रह गया है," बौकी ने अपने घर की ओर संकेत करते हुए कहा. हालाँकि उसने अपनी आँखें बंद ही रखीं क्योंकि वह अभी भी अपने को मृत समझ रहा था.

"भूत है," बौकी की ओर देखते हुए औरत चिल्लाई.

"ईईईईईईईईक!" सब लकड़हारे चूहों समान चिल्लाये. उन्होंने बौकी को वहीं गिरा दिया और भाग गये.



शीघ्र ही बौकी और उसकी बकरी के अतिरिक्त वहां कोई न था.

गड़ गड़ गड़ गड़, भूख से बौकी के पेट से आवाज़ आई.

मैं...मैं..., बौकी की बकरी मिमियाई. कुछ स्वादिष्ट आम उसे खाने के लिए मिल गये थे. अपनी बकरी की आम चूसने की आवाज़ वह सुन पा रहा था जिससे उसकी भूख और तेज़ हो गई.

"हे, हे, हे," बौकी उछल कर खड़ा हो गया. "कुछ आम मेरे लिए छोड़ दो."

बौकी ने एक पका हुआ आम अपने हाथ में पकड़ लिया और खाने लगा. "बकरी," बौकी ने कहा. "मुझे लगता है कि शायद इस संसार में मैं अकेला आदमी हूँ जो मरने के बाद भी उसी तरह आम खाना पसंद करता है जितना जीते जी करता था."

अह, बेचारा बौकी, वह कितना बड़ा मूर्ख है.

